

शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक २८ : नई दिल्ली : ६-१२ अक्टूबर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर के राजरहाट में स्थित भव्य 'महाश्रमण विहार' में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। चतुर्मास अब परिसंपन्नता की ओर है। आचार्यप्रवर ५ नवम्बर को चतुर्मासस्थल 'महाश्रमण विहार' से मंगल प्रस्थान करेंगे, ऐसा पूर्व निर्णीत है। निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर नवम्बर के अंतिम सप्ताह में बीस तीर्थकरों की निर्वाण भूमि के रूप में प्रतिष्ठित सम्मेद शिखर पधारेंगे, ऐसी संभावना है। वहां आचार्यप्रवर का ३० नवम्बर से २ दिसम्बर का प्रवास संभावित है तथा झारखंड के चास बोकारो में आगामी ६-८ दिसम्बर का प्रवास होना निर्धारित है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ

२६ सितम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रारम्भ हुआ। उसका प्रथम दिन सर्वधर्म सौहार्द दिवस के रूप में आयोजित हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में चिकित्सा के चार अंगों की चर्चा कर कहा--'जैसे बाह्य चिकित्सा में वैद्य प्रमुख होता है, वैसे ही आन्तरिक चिकित्सा में धर्मगुरु वैद्य होते हैं, प्रमुख होते हैं। उनके स्वयं के जीवन में धर्म की साधना हो तो उनका उपदेश और अधिक प्रभावी बन सकता है। भारत में धर्मगुरु, साधु-संन्यासी लोग मिलते हैं, यह मानों भारत का भाग्य है। यहां विभिन्न धर्म हैं, उनसे कितने-कितने लोग जुड़े हुए हैं। विभिन्न धर्मों में परस्पर सद्भाव रहना चाहिए, दंगा-फसाद नहीं होना चाहिए।' पूज्यप्रवर ने जैन धर्म, जैन साधुचर्या अहिंसा यात्रा और अणुव्रत के संदर्भ में जानकारी भी प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह प्रारम्भ हुआ है। विभिन्न धर्मों से जुड़े हुए व्यक्तित्व यहां पहुंचे हैं। हम धर्मों से जुड़े हुए लोग और धर्मों के मुखिया अपने-अपने अनुयायियों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहें कि जीवन में जितना संभव हो सके अहिंसा के मार्ग पर चलो, ईमानदारी के मार्ग पर चलो, संयम के मार्ग पर चलो। अच्छे और सही रास्ते पर चलोगे तो सही मंजिल भी मिल सकेगी। मंजिल सही है और रास्ता सही नहीं है तो मंजिल नहीं मिल सकती। हमारी मंजिल भी सही हो और रास्ता भी सही हो तो हम अपने गंतव्य तक पहुंच सकते हैं। विभिन्न धर्मों से जुड़े हुए लोग जनकल्याण का अच्छा कार्य करें, यह काम्य है।'

बौद्ध धर्म के बौद्ध भिक्षु डॉ. जिनप्रिया, आलिया युनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर मोहम्मद सुलेमान खुर्शीद, हेराल्ड के रीडर व सेंट थामस स्कूल के प्रिन्सिपल श्री देवराज फर्नांडीस, एसजीपीसी के पूर्व भारत के प्रभारी श्री जगमोहन सिंह गिल, सिलीगुड़ी शहर के काजी मौलाना खुलिलुर्रहमान, चर्च ऑफ नार्थ इंडिया व पूर्व फादर आर्मी कैप नासिक फादर वेवन मार्टिन ने भी अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। इस दौरान केथोलिक एसोसिएशन ऑफ बंगाल की पेट्रोन मेंबर मिस. एंजेलिना जस्नानी व सिस्टर प्रेमा भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान भी करवाया।

मिट्टी के गोले के समान बनो

२७ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने

मंगल प्रवचन में कहा--‘पुरुष चार प्रकार के होते हैं। कोई पुरुष मोम के गोले के समान मृदु होता है, कोई पुरुष लाख के गोले के समान कुछ कठोर होता है, कोई पुरुष काठ के गोले के समान कठोरतर होता है और कोई पुरुष मिट्टी के गोले के समान कठोरतम होता है। इन चारों में तारतम्य होता है। मोम का गोला सूर्य के ताप में पिघल जाता है। लाख का गोला सूर्य के ताप से तो नहीं पिघलता, किन्तु अग्नि के ताप से पिघल जाता है। काठ का गोला न सूर्य के ताप से पिघलता है, न अग्नि के ताप से, वह अग्नि में डालने से पिघल जाता है। मिट्टी का गोला न सूर्य के ताप से पिघलता है, न अग्नि के ताप से भी नहीं पिघलता है और न ही अग्नि में डालने पर भी पिघलता है। वह तो आग को सहनकर और मजबूत होता जाता है।

कोई पुरुष कठिनाइयों के सामने जल्दी घुटने टिका देता है। कोई थोड़ा सहन करने के उपरान्त कठिनाइयों से हार जाता है, कोई पुरुष प्रथम दो प्रकार के व्यक्तियों से ज्यादा सहन करता है, किन्तु भयंकर कठिनाइयां आने पर वह हिम्मत हार जाता है। कोई पुरुष कठिनाइयों, संघर्षों से नहीं घबराता और उन्हें सहते-सहते मंजिल को प्राप्त कर लेता है। ये चारों प्रकार के पुरुष क्रमशः मोम, लाख, काठ और मिट्टी के गोले के समान होते हैं।

पुरुष के ये चारों प्रकार मनोबल के संदर्भ में हैं। आदमी को इस संदर्भ में मोम, लाख और काठ के गोले के समान नहीं, मिट्टी के गोले के समान मजबूत रहना चाहिए। अच्छे संकल्प को निभाने के लिए आदमी को मिट्टी के गोले के समान दृढ़ रहना चाहिए। कठिनाई की स्थिति में भी स्वीकृत और अच्छे लगने वाले धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए।’

पूज्यप्रवर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत ‘जीवन विज्ञान और अणुव्रत’ विषय पर भी पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन से पूर्व ‘नवरात्र’ के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान करवाया।

आचार्यप्रवर ने ‘तेरापंथ प्रबोध’ आख्यान शृंखला के अंतर्गत जसोल मर्यादा महोत्सव वाले गीत ‘सन्तां! शासण ओ स्वामीजी रो..’ का आंशिक संगान भी किया। पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण ‘ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु ॐ जय भिक्षु जय भिक्षु जय भिक्षु जय’ मंत्र का पाठ भी किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में और जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आज से राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का प्रारम्भ हुआ। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--‘विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ जाएं तो आगे अच्छा कार्य करने वाली एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। कितने-कितने ज्ञानार्थियों को ज्ञानशाला के माध्यम से ज्ञान और सुसंस्कार देने का प्रयत्न किया जाता है। राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के माध्यम से भी बच्चों में अच्छे संस्कारों को निर्मित करने का, पुष्ट करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।’

त्याग की चेतना बढ़ाओ, चार संज्ञाओं पर नियंत्रण होगा

२८ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने ‘ठाणं’ आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--‘संज्ञा’ शब्द का एक अर्थ होता है-नामकरण। संज्ञा का दूसरा अर्थ है-ज्ञान। जैसे मनुष्य संज्ञी प्राणी है। जिसमें मन होता है, वह संज्ञी होता है। संज्ञा का तीसरा अर्थ है-संवेदन। कर्मों के उदय से होने वाला संवेदन संज्ञा कहलाता है।

शास्त्रकार ने कर्मोदय से होने वाले संवेदन के अर्थ में चार संज्ञाएं बताई हैं। उनमें पहली है-आहार संज्ञा। भोज्य पदार्थ को बार-बार खाने की इच्छा और रागात्मक भाव आहार संज्ञा होती है। आदमी को आहार संज्ञा पर नियंत्रण रखना चाहिए, क्योंकि यह साधना और स्वाध्याय में बाधा बन सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी आहार संज्ञा नुकसानदेह बन सकती है। आहार संज्ञा को नियंत्रित करने के लिए बार-बार त्याग करना चाहिए।

जैसे--भोजन के बाद पुनः भोजन करने के बीच जितना अंतराल हो, उतनी देर के लिए तीनों आहारों का त्याग कर लेना चाहिए। स्वास्थ्य की दृष्टि से खाना आवश्यक हो तो अलग बात है। भोजन करना एक बात है, किन्तु इसके प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।

दूसरी संज्ञा है--भय। भय भी मोहनीय कर्म के उदय का परिणाम है। आदमी अनेक संदर्भों में भयभीत रह सकता है। भय संज्ञा पर नियंत्रण करने के लिए आदमी का यह संकल्प हो कि वह दूसरों को भयभीत नहीं करेगा। दूसरों को भयभीत बनाने वाले व्यक्ति को स्वयं भयभीत बनना पड़ सकता है। भय को भगाने के लिए आदमी को माया-मृषा के प्रयोग से बचना चाहिए। अंधेरे आदि में भय लगे तो 'णमो जिणाणं जियं भयाणं' का जप करना चाहिए। भय को नियंत्रित करने के लिए अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग भी बताया गया है।

तीसरी संज्ञा है--मैथुन। साधना में आगे बढ़ने के इच्छुक व्यक्ति को मैथुन संज्ञा से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी में भोगेच्छा हो सकती है, भिन्न लिंगी के प्रति आकर्षण हो सकती है। मोहनीय कर्म के उदय से भिन्न लिंगी के प्रति आकर्षण पैदा हो सकता है या कभी समलिंगी के प्रति भी आकर्षण हो सकता है। आदमी को साधना में आगे बढ़ने के लिए उसे कम करने का प्रयास करना चाहिए। अपनी इन्द्रियों को संयम करने का प्रयास करना चाहिए। भिन्न लिंगी को ज्यादा देखने से बचना चाहिए, ताकि वह आकर्षण का भाव कम रह सके। अनुप्रेक्षा, चिन्तन, नवबाड़ की साधना और भोग संबंधी चिन्तन और वार्तालाप का संयम कर मैथुन संज्ञा पर नियंत्रण किया जा सकता है। गृहस्थ स्वदार/स्वपति संतोषव्रत धारण कर मैथुन संज्ञा पर नियंत्रण कर सकता है।

चौथी संज्ञा है--परिग्रह संज्ञा। पदार्थों के प्रति आकर्षण व रागभाव परिग्रह संज्ञा होती है। आदमी को पदार्थों के आकर्षण और अनावश्यक संग्रह से बचना चाहिए। इच्छा परिमाण के द्वारा परिग्रह संज्ञा को नियंत्रित किया जा सकता है। त्याग की चेतना को पुष्ट बनाकर इन चारों संज्ञाओं को नियंत्रित किया जा सकता है।

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला को आगे बढ़ाया। आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम में नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान भी करवाया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

आज पश्चिम बंगाल पुलिस के अंतर्गत लॉ एंड ऑर्डर के डायरेक्टर जनरल श्री अनुज शर्मा, विधाननगर के पुलिस कमिश्नर श्री ज्ञानवंतसिंह तथा सीआईडी के आईजी श्री अजय रानाडे ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पुण्योदय में भी संयमयुक्त और आसक्तिमुक्त रहो

२६ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन का एक सुन्दर सिद्धान्त है कर्मवाद। कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जो शुभानुबंधी होते हैं। उनके उदयकाल में पुनः पुण्य का बंध होता है अथवा पाप बंध नहीं होता, उन्हें पुण्यानुबंधी पुण्य कहा जा सकता है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जो शुभ के रूप में उदय में हैं, किन्तु अशुभ कर्मों का बंध करवाने वाले हैं, वे पापानुबंधी पुण्य होते हैं। कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जो अशुभ रूप में उदय में आते हैं, किन्तु वे पुण्य का बंध करवाने वाले अथवा पाप का बंध नहीं करवाने वाले होते हैं, वे पुण्यानुबंधी पाप हैं। कुछ कर्म ऐसे होते हैं जो अशुभ रूप में उदय में आते हैं और वे पुनः पाप का बंध करवाने में निमित्त बनते हैं, उन्हें पापानुबंधी पाप कहा जा सकता है।

जिस आदमी के पुण्य के कारण काफी अनुकूलता रहती है और वह अनासक्त रहता है, उसके पुण्य का उदय आगे के लिए भी शुभ का बंध करवाने में निमित्त हो सकता है। आदमी को पुण्य के योग से भौतिक सुख प्राप्त होता है। आदमी पुण्य के उदयकाल में भी अनासक्त रहता है तो ये पुण्य पुण्यानुबंधी हो सकते हैं

अथवा पाप का बंध नहीं करवाते।

जो आदमी पुण्य के उदयकाल में आसक्त रहता है, उसके वे पुण्य पाप का बंध करवाने में निमित्त बन जाते हैं। जो आदमी पाप के उदयकाल में अनासक्त और समत्व भाव में रहता है, उसके वे पाप पुण्यानुबंधी होते हैं। जो आदमी पाप के उदयकाल में अशुभ प्रवृत्ति में रत रहता है, उसका वह पापोदय फिर पाप का बंध करवाने में निमित्त बन सकता है।

आदमी के लिए यह ध्यातव्य है कि वह पुण्य के उदयकाल में आसक्ति में संयमी और आसक्तिमुक्त रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई पुण्य आगामी पाप बंधन का निमित्त बन जाता है और कोई पुण्य फिर आगामी पुण्यबंध का निमित्त बन जाता है। यही बात पाप कर्म के विषय में ज्ञातव्य है।

आचार्यप्रवर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत 'पर्यावरण शुद्धि अणुव्रत' विषय के संदर्भ में संयम की प्रेरणा प्रदान की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाते हुए द्वितीय आचार्य भारमलजी के शासनकाल का संक्षिप्त वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित 'भारीमाल गणी' गीत का आंशिक संगान किया। आचार्यप्रवर ने नवरात्र के अंतिम दिन के कार्यक्रम में निर्धारित अनुष्ठान करवाया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

आज आईआरएस श्री बाबूराम देवासी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

समस्या समाधायक बने मति

३० सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाण' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में मति का अति महत्वपूर्ण स्थान है। सबमें एक समान मति हो, यह आवश्यक नहीं। शास्त्रकार ने मति के चार स्तर बताए हैं--प्रथम स्तर की मति घड़े के पानी के समान अत्यल्प होती है। घड़े में बहुत कम पानी समाता है। बुद्धि के संदर्भ में सबसे कम मति को घड़े के पानी के समान बताया गया है। दूसरे स्तर की मति गड्डे के पानी के समान अल्प होती है। वह घड़े से कुछ ज्यादा होती है। तीसरे स्तर की मति तालाब के पानी के समान होती है। वह बहुत मति होती है। तालाब के पानी से कितने लोगों की आवश्यकता पूर्ति हो सकती है। चौथे स्तर की मति समुद्र के पानी के समान होती है, बहुतम होती है। यह सबसे उच्च स्तर की मति होती है।

मति का विकसित होना जीवन की एक अच्छी उपलब्धि होती है। मति का प्राप्त होना एक बात है और उसका उपयोग क्या हो रहा है, यह दूसरी बात है। मति के द्वारा किसी को परेशान भी किया जा सकता है, समस्या को उत्पन्न भी किया जा सकता है और मति के द्वारा किसी के कष्ट को दूर भी किया जा सकता है, समस्या का समाधान भी किया जा सकता है। आदमी की बुद्धि समस्यापादक नहीं, समस्या समाधायक बनी रहे। मोह से युक्त बुद्धि मलिन और मोह से विमुक्त बुद्धि शुद्ध होती है। शुद्ध बुद्धि अच्छा फल देने वाली हो सकती है।

बुद्धि का उपयोग अच्छा किया जाए तो और ज्यादा अच्छी बात हो सकती है। जिस आदमी के पास बुद्धि है और वह बुद्धि के द्वारा गलत बात को सिद्ध करने का प्रयास करता है तो वह बुद्धि का दुरुपयोग है। जो व्यक्ति अनाग्रही होकर बुद्धि के द्वारा युक्तिसंगत बात को ग्रहण करने का प्रयास करता है, वह बुद्धि का सदुपयोग है। आदमी को अपनी मति से सच्चाई को प्रकट करने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी अनाग्रही रहता है, शुभ भावों में रहता है तो मति की स्फुरणा अच्छी रहती है और उस स्फुरणा से वह दूसरों की समस्या को समाहित करने का प्रयत्न भी कर सकता है। मति के द्वारा ज्ञान की गहराई में जाने का प्रयास करना और अच्छे ग्रंथों को पढ़ने का प्रयास करना भी मति का सदुपयोग होता है।'

‘तेरापंथी साधु वर्षा रोक देते हैं’ कहते ही वर्षा हुई प्रारम्भ

आचार्यप्रवर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत ‘नशामुक्ति और अणुव्रत’ विषय के संदर्भ में मंगल प्रेरणा भी प्रदान की। ‘तेरापंथ प्रबोध’ आख्यान शृंखला के अंतर्गत पूज्यप्रवर ने आचार्य भारमलजी से संबंधित उदयपुर के घटना प्रसंग को सुनाते हुए विरोधियों द्वारा आचार्य भारमलजी के विरुद्ध उदयपुर के महाराजा को जा रही शिकायत का वर्णन करते हुए ज्योहीं यह कहा—‘तेरापंथी साधु जहां जाते हैं, वर्षा को रोक देते हैं।’ तुरन्त तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई। यह देखकर समुपस्थित श्रोताओं के मुख पर मुस्कान छा गई। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

लंदन स्थित जैन विश्वभारती के न्यासी श्री राजीवभाई शाह ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। लंदन में पीएचडी संपन्न कर पूज्यचरणों में लौटें समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी तथा उनकी सहवर्ती समणी उन्नतप्रज्ञाजी ने अपनी आंतरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर से ६ सितम्बर २०१७ को अनशन का प्रत्याख्यान करने वाले श्री मोतीलालजी नाहटा का अनशन संलेखना सहित चालीसवें दिन अर्थात् २८ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। उनके परिजनों ने आज परम पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन प्रेरणा प्राप्त की। ज्ञातव्य है कि श्री मोतीलालजी मुनि मोहजीतकुमारजी के संसारपक्षीय पिता थे।

क्रोध, ईर्ष्या, कृतघ्नता और दुराग्रह छोड़ो

१ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ‘ठाणं’ आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा—‘आदमी के भीतर चार कारण ऐसे हो सकते हैं, जिनके कारण वह किसी व्यक्ति के वास्तविक गुणों को भी अस्वीकार कर देता है। उनमें पहला कारण है—क्रोध। आदमी क्रोध में गुणीजनों के गुणों को अस्वीकार कर देता है। आवेश रूप गुस्सा एक ऐसा तत्त्व है, जो संभवतया किसी भी दृष्टि से लाभप्रद है ही नहीं, उससे अनेक नुकसान हो सकते हैं। गुस्से के कारण आदमी हिंसा और अयथार्थ में जा सकता है। आदमी गुस्से को छोड़ने का प्रयास करे, यह काम्य है।

दूसरों के विद्यमान गुणों को अस्वीकार करने के पीछे दूसरा कारण है—प्रतिनिवेश अर्थात् ईर्ष्या। आदमी दूसरों की अच्छाई या उनके विकास को सहन नहीं कर पाता, इसलिए वह गुणीजनों के गुणों को अस्वीकार कर देता है।

दूसरों के विद्यमान गुणों को अस्वीकार करने के पीछे तीसरा कारण होता है—अकृतज्ञता। कृतज्ञता के अभाव में आदमी उपकारी के उपकार को नकार देता है। आदमी को कृतघ्नता से दूर रहना चाहिए।

दूसरों के विद्यमान गुणों को अस्वीकार करने का चौथा कारण है—मिथ्यामिनिवेश अर्थात् दुराग्रह। आदमी दुराग्रह के कारण भी दूसरों के विद्यमान गुणों को अस्वीकार कर देता है। मनुष्य को कभी दुराग्रह में नहीं जाना चाहिए। इस प्रकार क्रोध, ईर्ष्या, कृतघ्नता और दुराग्रह त्याज्य हैं।’

आचार्यप्रवर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत निर्धारित विषय ‘अनुशासन और अणुव्रत’ के संदर्भ में भी पावन प्रेरणा भी प्रदान की।

श्री मनमोहन सिंह ने अपनी नवीन सीडी ‘प्रज्ञा ज्योति’ श्री पारस बच्छावत के साथ पूज्यप्रवर के सम्मुख लोकार्पित करते हुए सीडी में गाए गीतों में से एक गीत ‘स्वाम साचा अद्भुत वाचा कही रे’ का संगान किया। ज्ञातव्य है कि इस सीडी में जयाचार्य द्वारा रचित चयनित गीतों को प्रस्तुति दी गई है। भुवनेश्वर वर्धमान महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक श्री प्रकाश बेताला की प्रस्तुति के उपरान्त भुवनेश्वरवासियों ने गीत का सामूहिक संगान किया। कोलकाता अणुव्रत समिति से संबंधित महिलाओं द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के संदर्भ में अणुव्रत गीत को प्रस्तुति दी गई।

शासनश्री साध्वी चेतनाश्री (सरदारशहर) का प्रयाण

२६ सितम्बर को कालावाली में प्रवासित शासनश्री साध्वी चेतनाश्रीजी (सरदारशहर) का प्रयाण हो गया। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का उपक्रम रहा।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी चेतनाश्रीजी संसारपक्ष में सरदारशहर के पटावरी परिवार से संबद्ध थीं। उन्होंने विक्रम संवत् १६६८ में करीब चौदह वर्ष की अवस्था में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से दीक्षा स्वीकार की। उनका मूल नाम साध्वी चौथांजी था। दीक्षित होने के बाद वे कई दशकों तक साध्वी गौरांजी (राजगढ़) के साथ रहीं और उनके साथ सुदूर प्रान्तों की यात्राएं कीं। सिलाई-रंगाई आदि कार्यों में तथा रजोहरण, प्याले, टोपसियों के निर्माण में उन्हें दक्षता प्राप्त थी। साध्वी गौरांजी के प्रयाण के बाद वे साध्वी जिनबालाजी के सिंघाड़े में रह रही थीं। मैंने उन्हें सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव के अवसर पर 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। उनका चतुर्मास कालावाली में हो रहा था। वहां उनके कारण साध्वी जिनबालाजी के सिंघाड़े का लंबे समय से प्रवास हो रहा था।

गत आश्विन शुक्ला पंचमी तदनुसार २५ सितम्बर २०१७ को उन्हें तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया गया था। आश्विन शुक्ला षष्ठी को प्रातः करीब ७.१६ बजे हरियाणा के कालावाली में वे पंडित मरण को प्राप्त हो गईं। करीब ७६ वर्षों का उनका संयम पर्याय रहा। इतना लंबा संयम पर्याय अपने आप में अच्छी बात है। साध्वी जिनबालाजी और उनकी सहवर्ती साध्वी लाज्जावतीजी, साध्वी करुणाप्रभा और साध्वी भव्यप्रभा को एक वृद्ध साध्वी की सेवा का अच्छा अवसर मिल गया। हम साध्वी चेतनाश्री के गुणों का अनुमोदन करते हैं।'

आचार्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने साध्वी चेतनाश्रीजी की स्मृति में 'चार लोगस्स' का ध्यान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'वे व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें जैनशासन, भैक्षवशासन में दीक्षित होने का मौका मिलता है और जो लंबे समय तक साधना करके गुरु चरणों में अपनी जीवन यात्रा संपन्न कर लेते हैं। साध्वीश्री चेतनाश्रीजी ने साध्वीश्री गौराजी महासतियांजी के साथ सुदूर प्रदेशों की कठिन-कठिन यात्राएं कीं। वे अपने सिंघाड़े में पूर्ण समर्पित भाव से रही। जैसा कि कहा जाता है अग्रगण्य के तन का कपड़ा बनकर रहना, उस रूप में उन्होंने अपनी पहचान बनाई। वे अपने संघ के प्रति और गुरु के प्रति तो समर्पित थीं ही, अपनी अग्रगण्य के प्रति भी पूर्ण समर्पित रहीं। वे सेवाभावी साध्वी थीं। सिलाई, रंगाई में दक्ष थीं।

इन वर्षों में वे चलने में अक्षम थीं, पर पूज्यप्रवर के अनुग्रह से साध्वी जिनबालाजी उन्हें साधन से यात्रा कराती रहीं और साध्वी जिनबालाजी की यही इच्छा रही कि मैं अंतिम समय तक साध्वीश्री चेतनाश्रीजी की सेवा करूं और साध्वीश्री चेतनाश्रीजी की भी यही इच्छा थी कि मैं साध्वी जिनबालाजी के पास रहूं। साध्वीश्री चेतनाश्रीजी के बारे में ऐसा सुना है कि जब छोटी साध्वियां किसी काम में संलग्न रहतीं तो वे उठकर उन साध्वियों को पानी पिला देती थीं। साध्वियां कहा करती कि आप हमें पानी पिलाने के लिए क्यों पधारती हैं? तो वे यह कहतीं कि तुम तो घूमती-फिरती हो, गोचरी जाती हो और भी काम करती हो, मैं और कुछ नहीं कर सकती तो कम से कम यह काम तो करूं। हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ संत मुनि खेतसीजी स्वामी के बारे में ऐसा पढ़ा है कि संत जब दोपहर में बैठे रहते, पढ़ते-लिखते तो वे पानी का पात्र हाथ में लेकर संतों के बीच से घूमते थे और उनको पानी पिलाते थे। इसी प्रकार साध्वीश्री चेतनाश्रीजी भी साध्वियों का यथाशक्य सहयोग करती थीं।

अंतिम समय में उनकी बहुत सेवा हुई, ऐसी सेवा वास्तव में तेरापंथ धर्मसंघ में ही हो सकती है। वे काफी अस्वस्थ थीं, उनके स्वास्थ्य में काफी दिक्कतें थीं, लेकिन साध्वियों ने भी पूरे मनोयोग और अहोभाव के साथ

उनकी सेवा की। वास्तव में तेरापंथ की सेवा विलक्षण है। आचार्यों की कृपा से ही ऐसी सेवा हो सकती है। यह श्रीमज्जयाचार्य की सूझबूझ है कि उन्होंने सेवाकेन्द्रों की व्यवस्था की। चाहे सेवाकेन्द्र में हो या सिंघाड़े में, वृद्ध या रुग्ण साध्वियों की जिन बढ़ते-चढ़ते परिणामों से सेवा होती है, वह सेवाभाव भी तेरापंथ की विशेषताओं को उजागर करता है। साध्वीश्री चेतनाश्रीजी ने अच्छे रूप में संयम का पालन कर अपनी जीवन यात्रा का समापन किया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ें, यही मंगल भावना।'

कालावाली से समागत श्री दिनेश गर्ग ने भी इस संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

चार धर्मद्वार, हर एक मुक्ति का दातार

२ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'चार धर्म द्वार बताए गए हैं--क्षांति, मुक्ति, आर्जव और मार्दव। यहां धर्म शब्द का अर्थ मोक्ष करना उचित प्रतीत हो रहा है। कारण में कार्य को आरोपित कर दिया जाए तो धर्म द्वार और मोक्ष द्वार एक ही बात हो जाती है। धर्म द्वार की दूसरी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है, धर्म ही द्वार है, वह धर्म द्वार है।

प्रश्न हो सकता है कि किसी एक द्वार में अच्छी तरह प्रविष्ट होने से मंजिल मिल जाएगी अथवा चारों ही द्वारों में प्रवेश करना होगा। इसके उत्तर में संभवतः यह कहा जा सकता है कि चारों द्वारों की अपेक्षा यदि एक द्वार में भी अच्छी तरह प्रवेश कर लिया जाए तो भी मंजिल मिल जाएगी। क्षांति की पूर्ण साधना कर ली जाएगी तो मंजिल मिल जाएगी। इसी प्रकार निर्लोभता/आर्जव/मार्दव की भी पूर्ण साधना हो जाए तो भी मंजिल मिल जाएगी। क्रोध का संपूर्ण रूप में नाश हो जाएगा तो क्षांति सिद्ध हो जाएगी और जब क्षांति पूर्णतया निष्पन्न हो जाएगी तो शेष तीनों द्वार स्वतः निष्पन्न हो जाएंगे। इसी प्रकार मुक्ति, आर्जव और मार्दव में से कोई एक सिद्ध हो जाएगा तो शेष तीनों अपने निष्पन्न हो जाएंगे। ये चारों इतने अभिन्न मित्र हैं कि एक भी चला जाता है तो शेष तीनों भी तत्काल या कुछ समय में विनाश को प्राप्त हो जाते हैं। क्रोध का विलोम शब्द है क्षांति। अहम का विलोम शब्द है मार्दव। माया का विलोम शब्द है आर्जव और लोभ का विलोम शब्द है मुक्ति। ये चारों इन चारों कषायों को जीतने के साधन भी हैं।'

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

पूज्यप्रवर ने 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के संदर्भ में कहा--'आज दो अक्टूबर है। अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस है। जीवन में अहिंसा का बहुत महत्त्व है। अहिंसा दिवस महात्मा गांधी से जुड़ा हुआ है। एक महत्त्वपूर्ण बात है कि महात्मा गांधी की जन्म जयंती को अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है जो सबके लिए कल्याणकारी है। किसी धर्म को मानने वाला, किसी जाति का, किसी देश का, किसी वेश का और किसी परिवेश का व्यक्ति हो, अहिंसा सबका कल्याण करने वाली है।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सातवां और अंतिम दिन है। न केवल अणुव्रत के मानने वालों के लिए, हर आदमी के लिए सामान्यतया अहिंसा महत्त्वपूर्ण है। अहिंसा दिवस का अपना महत्त्व है। इस दिवस की सार्थकता तब ज्यादा हो, जब आदमी की चेतना में अहिंसा की जागरणा हो जाए। आदमी-आदमी की भी हिंसा कर देता है। घरेलू हिंसा हो जाती है। परिवार के सदस्यों का भी कहीं-कहीं उत्पीड़न किया जाता होगा। अपेक्षा है कि व्यक्ति के भीतर अहिंसा का विकास हो, साथ रहने वाले लोग अहिंसा से साथ रहें, शांतिपूर्ण प्रवास हो। परिवार में शांति रहे, समाज में शांति रहे, राष्ट्र में शांति रहे और विश्व में शांति रहे। राष्ट्र-राष्ट्र का संबंध शांतिपूर्ण हो। यदा-कदा राष्ट्रों के बीच तनाव का माहौल बन जाता है, यह अच्छा नहीं। पड़ोसी देश परस्पर शांति और सौहार्द से रहें तो अच्छा हो। पड़ोसी चाहे घर हैं, चाहे राज्य हैं, चाहे देश हैं, आपस में

मैत्री और सौहार्द का भाव रहना चाहिए। पड़ोसियों में अहिंसा, मैत्री और सौहार्द हो तो यह मानना चाहिए कि अहिंसा की ज्योति मानों प्रज्वलित हो रही है। महात्मा गांधी भी अपने आप में कोई विशिष्ट व्यक्तित्व थे, ऐसा प्रतीत हो रहा है। एक आदमी में कितना साहस, कितना अच्छा चिंतन और स्फुरणा हो सकती है।

अणुव्रत आंदोलन गुरुदेव तुलसी का एक अवदान है। किसी भी संप्रदाय का आदमी अणुव्रत से जुड़ा रह सकता है। सात दिनों तक 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' मनाया जाता है। विद्या संस्थानों, पुलिस स्थानों आदि सार्वजनिक स्थानों में अणुव्रत का प्रचार होता रहे। व्यापारियों, राजनीतिज्ञों, जेल में कैदियों, विभिन्न समाजों के बीच भी अणुव्रत की बात हो। क्योंकि अणुव्रत व्यापक है। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह और व्यापक रूप में आयोजित होता रहे। जगह-जगह विचार गोष्ठियां होती रहें, ताकि लोगों को अच्छा मार्ग मिल सके, उनका जीवन अच्छा बन सके और उनकी चेतना अच्छी बन सके।'

ज्ञानशाला रजत जयंती वर्ष का समापन

परमाराध्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आज जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में समायोजित ज्ञानशाला रजत जयंती वर्ष का समापन हुआ। कार्यक्रम में कोलकाता ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया और ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला रजत जयंती समारोह के संदर्भ में प्रस्तुत स्मारिका 'ज्ञानशाला संदीपन' महासभा के पदाधिकारियों, ज्ञानशाला से संबंधित कार्यकर्ताओं तथा स्मारिका की संपादिका श्रीमती सरोज छाजेड़ ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'ज्ञानशाला का रजत जयंती वर्ष का आज समापन का दिवस है। ज्ञानशाला महासभा की एक सुन्दरतम गतिविधि है, बहुत उपयोगी है। नई पौध को मानों सिंचन देने वाली प्रवृत्ति है। समाज की भावी युवा पीढ़ी के लिए एक मूल को मानों सिंचन देने का प्रयास ज्ञानशाला के माध्यम से किया जा रहा है। बच्चे अच्छे हैं तो आशा करें कि समाज अच्छा हो सकेगा। इसलिए बालपीढ़ी पर ध्यान देना अच्छा उपक्रम है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की कृपा को मान लें, उनके समय में ज्ञानशालाएं शुरू हुई थीं, आचार्य महाप्रज्ञजी के समय में भी ये आगे बढ़ीं, अभी भी चल रही हैं। जहां-जहां ज्ञानशालाएं हैं, वहां-वहां तो ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों की संख्यावृद्धि पर ध्यान दिया जाना चाहिए और जहां ज्ञानशालाएं नहीं खुली हैं और खुलने की संभावनाएं हैं तो वहां नई ज्ञानशालाएं खुल सकें, ऐसा प्रयास होना चाहिए। संख्यावत्ता और गुणवत्ता का योग रहना चाहिए। संख्यावत्ता गुणवत्ताविहीन न हो। संख्यावत्ता और गुणवत्ता दोनों आगे बढ़ें तो उत्तम बात है।

महासभा के तत्त्वावधान में चलने वाले ज्ञानशाला उपक्रम से कितने-कितने बच्चों को आज तक लाभान्वित होने का मौका मिला है और हमारे कितने-कितने चारित्रात्माएं, जो कभी ज्ञानशाला में पढ़ने वाले थे, आज हमारे धर्मसंघ में सेवा देने वाले बन गए हैं, काम करने वाले बन गए हैं। मैंने पिछली बार ध्यान दिया कि हमारे कितने-कितने साधु-साध्वियां कभी गृहस्थावस्था में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी थे, आज वे वंदनीय बन गए हैं और अपने ढंग से सेवा देने वाले बन गए हैं।

ज्ञानशाला एक सुन्दर भूमि है, जहां संस्कारों का निर्माण होता है, ज्ञान चेतना का विकास होता है। वर्तमान में लगता है बच्चे काफी बुद्धिमान होते हैं, अच्छी स्कूलों में पढ़ने वाले होते हैं, जिन्हें भौतिकता का माहौल भी मिलता होगा। ऐसी स्थिति में उन्हें आध्यात्मिकता-धार्मिकता का माहौल भी मिलता है तो उनके लिए ज्यादा अच्छा है। उनमें बुद्धिमत्ता है और उन्हें धार्मिकता-आध्यात्मिकता का अच्छा माहौल मिल गया, अच्छे संस्कारों को प्राप्त करने का मौका मिल गया तो वे समाज के लिए अच्छे उपयोगी बन सकते हैं, औरों के लिए

उपयोगी बन सकते हैं और खुद के लिए भी उपयोगी बन सकते हैं। ज्ञानशाला रजत जयंती वर्ष का समापन अच्छी प्रेरणा देकर जाए, यह अभिलषणीय है।’

ज्ञानशाला के रजत जयन्ती वर्ष के समापन के संदर्भ में पूज्यप्रवर के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के अंतर्गत ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में द्विदिवसीय कार्यक्रम समायोजित हुआ। जिसमें करीब ३२८ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को विभिन्न सत्रों में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी से भी प्रेरणा प्राप्त हुई। साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी दीप्तिशशी और समणी निर्मलप्रजाजी के वक्तव्य हुए। 9 अक्टूबर की रात्रि में आयोजित कार्यक्रम में ज्ञानशाला प्रशिक्षकों और ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला के संदर्भ में विविध प्रस्तुतियां दीं।

ज्ञानशाला : स्नातक दीक्षांत समारोह का समायोजन

मध्याह्न में पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के द्वारा स्नातक दीक्षांत समारोह समायोजित हुआ। जिसके अंतर्गत ज्ञानशाला प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के अंतर्गत वर्ष २०१४ में उत्तीर्ण ५० स्नातकों को डिग्री प्रदान करने के साथ-साथ स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पूज्यश्री ने दीक्षांत संबोध प्रदान करते हुए कहा--‘ज्ञानशाला के संदर्भ में ज्ञानार्थियों और ज्ञानार्थियों के प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देना एक अच्छा कार्य है। ज्ञानशाला में प्रशिक्षित प्रशिक्षक प्रशिक्षण देते हैं तो उसमें निखार आ सकता है। जहां प्रशिक्षण न हो, ढर्रे से कार्य चले, वहां तेजस्विता में मन्दता आ सकती है। हर कार्य में प्रशिक्षण से कौशल को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञानशाला में प्रशिक्षण देने वालों का भी प्रशिक्षण होता है। प्रशिक्षित प्रशिक्षक जब बच्चों को प्रशिक्षण देते हैं, तब बच्चों पर भी उसका अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। प्रशिक्षण देने वालों को प्रशिक्षण देना और भी विशेष कार्य होता है। प्रशिक्षकों को तैयार करना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। प्राध्यापक सघन रूप में प्रशिक्षित होंगे तो वे प्रशिक्षकों को अच्छे रूप में तैयार कर सकेंगे।

दीक्षान्त समारोह का उपक्रम समायोजित हो रहा है। ‘स्वाध्यायान् मा प्रमादीः’ स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना चाहिए। जितना संभव और उचित हो, आदमी को स्वाध्याय करना चाहिए। प्रशिक्षण देने वाले जितना स्वाध्याय करते रहेंगे या नया-नया कुछ पाने का प्रयास करते रहेंगे तो उनके प्रशिक्षण की कला में और ज्यादा तेजस्विता निखर सकेगी। महासभा के तत्वावधान में यह ज्ञानशाला का उपक्रम खूब फलता-फूलता रहे, शुभाशंसा।’ कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रत्ना कोठारी ने किया।

श्री सीमेंट के चेयरमेन श्री हरिमोहन बांगड़ तथा पेटन ग्रुप के चेयरमेन श्री हरिप्रसाद बुधिया ने आज रात्रि में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर का उनके साथ लंबा वार्तालाप हुआ। इस दौरान आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा भी प्रदान की।

जिज्ञासा-समाधान

३ सितम्बर को तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री सुरेश गोयल अपने परिजनों व जैनेतर संबंधीजनों व मित्रों के साथ पूज्यप्रवर के उपासनार्थ आए। पूज्यप्रवर की उपासना के दौरान अनेक लोगों ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी जिज्ञासाएं रखीं। आचार्यप्रवर ने उन्हें समाहित किया। यहां प्रस्तुत हैं वे जिज्ञासाएं और आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त समाधान--

जिज्ञासा-- जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है। उसके बाद भी आज की युवा पीढ़ी धर्म के प्रति जागरूक नहीं है। क्या कारण है कि अब भी युवा पीढ़ी उससे बहुत दूर है और धर्म की फिलोसोफी को इतना नहीं जानती?

समाधान-- सारे युवा लोग दूर नहीं हैं। कई निकट भी हैं। कई लोग कुछ जानते भी हैं। कुछ लोग अपने कार्य में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें धर्म को जानने का मौका ही नहीं मिलता और भौतिकता में रहने वालों को

आध्यात्मिकता का इतना ज्ञान कैसे हो? कई लोग टेलीविजन के माध्यम से धर्मगुरुओं के प्रवचन सुनकर संपर्क में रहते हैं। वे निकट आएँ या न आएँ, टेलीविजन के संपर्क में रहकर भी वे धर्म के संपर्क में आ सकते हैं। जिंदगी में यथासंभव अच्छे मूल्य आने चाहिए, संयम आना चाहिए, अहिंसा आनी चाहिए। ये जिंदगी में आ जाएँ तो आदमी जैन बने या न बने, जीवन सद्गुण सम्पन्न बन जाता है।'

जिज्ञासा— आत्मा क्या है?

समाधान— आत्मा एक सूक्ष्म चीज है, पर उसे समझा जा सकता है। आदमी की मृत्यु होती है, तब शरीर निष्क्रिय हो जाता है। निष्क्रिय होने का कारण है कि कोई तत्त्व शरीर से निकल जाता है। वह तत्त्व आत्मा है। मृत्यु के बाद जो तत्त्व शरीर में नहीं रहा, वह आत्मा है। आत्मा स्थायी है, ऐसा माना गया। वह जीवन के बाद भी रहती है। शरीर तो नष्ट हो जाता है, आत्मा आगे भी जाती है, फिर एक नया जन्म ले लेती है। उसे आँखों से देखा नहीं जा सकता, कोई भी यंत्र आ जाए, आत्मा को देखा नहीं जा सकता। वह अमूर्त है, अरूप है, आनंदमय और ज्ञानमय भी है। संसारी आत्मा के ज्ञान और आनंद कर्मों से आवृत रहते हैं। जैसे आग पर राख आ जाती है और जब राख हटती है तो जलते हुए अंगारे सामने आ जाते हैं। वैसे ही आत्मा में ज्ञान की ज्योति है। उसके ऊपर की आवरण रूपी राख हटती है तो ज्ञान की ज्योति प्रचलित हो जाती है।

जिज्ञासा— अनेक बार देखा है कि किसी कार्य को अच्छे मन से करते हैं, निष्ठा और ईमानदारी से करते हैं, लेकिन उसके बाद भी चित्त को शांति नहीं मिलती, इससे निजात पाने के लिए क्या करना चाहिए?

समाधान— आप अपने आप से पूछिए। भावना अच्छी, किया अच्छा, कार्य अच्छा, फिर मन को किस बात से संतुष्ट नहीं मिल रही। मन को पूछिए—क्या कमी रही? मान लो आपका बेटा आपसे एक लाख रुपया मांग रहा है। आपने उसको पच्चीस हजार रुपए ही दिए। तब तो वह सोच सकता है कि मुझे पूरा संतोष नहीं मिला, मेरे पिताजी ने मुझे पच्चीस हजार ही दिए, किन्तु आप उसे एक लाख दे देते हैं तो फिर वह असंतुष्ट क्यों रहेगा? सब कुछ करने के बाद भी यदि ऐसा होता है तो फिर आपको थोड़ी देर जप का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ मन को भी समझाना चाहिए कि मैं पवित्र भावना से अच्छा कार्य कर रहा हूँ, फिर किस बात का असंतोष? जप करने और मन को समझाने से इस स्थिति से बाहर आया जा सकता है।

जिज्ञासा— पुरुषार्थ और प्रारब्ध में क्या संबंध है? आधे जन्म अंगुलिमाल रहा है और आधे जन्म वात्मिकी रहा। प्रारब्ध से रहा कि पुरुषार्थ से?

समाधान— प्रारब्ध और पुरुषार्थ को मैं पुरुषार्थ और भाग्य के रूप में देख रहा हूँ। हमारे जीवन में पुरुषार्थ का महत्त्व है और भाग्य का भी महत्त्व है। वर्तमान का पुरुषार्थ भविष्य का भाग्य बन जाता है। संसारी प्राणी में जन्मों की शृंखला रहती है। पिछले जन्म में क्या किया? उससे पहले क्या किया? उससे पहले क्या किया? किस जन्म में कैसे कर्म किए? उन पूर्वकृत कर्मों का प्रभाव रहता है। जैसे वात्मिकी एक समय में डाकू था। फिर संत का अच्छा योग मिल गया, जीवन बदल गया और वह अच्छा आदमी भी बन गया। यहां पुरुषार्थ ने भी कार्य किया।

हमारे जीवन में भाग्य, नियति का भी योग है और साथ में कुछ अंशों में पुरुषार्थ का भी योग है। वर्तमान का पुरुषार्थ आगे का भाग्य बन जाता है। जैसे—दूध ही दही बनता है। इसी तरह पुरुषार्थ ही भाग्य बन जाता है। पुरुषार्थ और भाग्य तो एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। सारांश की बात यह है कि आदमी को भाग्य पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए, सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। भाग्य भरोसे नहीं बैठना चाहिए। भाग्य भरोसे बैठा रहने वाला व्यक्ति दुनिया का अभागा आदमी होता है। भाग्य भरोसे नहीं बैठकर अच्छा पुरुषार्थ किया जाए तो भाग्य भी अच्छा बन सकेगा।

जिज्ञासा— शास्त्रों में कहा है कि पकड़ना और छोड़ना दोनों आसक्ति के रूप हैं। ये करूंगा, ये नहीं करूंगा,

दोनों आसक्ति है। इस संदर्भ में मैं असमंजस में हूँ, क्या करूँ?

समाधान— छोड़ना और पकड़ना सापेक्ष है। क्या छोड़ना और क्या पकड़ना, यह ध्यातव्य होता है। अच्छी चीज को पकड़ना तथा गलत को छोड़ना अच्छा है और गलत को पकड़ना व अच्छे को छोड़ना गलत है। आप इतना-सा समझ लें कि अच्छी चीज को पकड़ना चाहिए और गलत को छोड़ना चाहिए तथा अच्छे को छोड़ना नहीं चाहिए और गलत को पकड़ना नहीं चाहिए। उदाहरण के लिए कोई आदमी चोरी करता है तो चोरी छोड़ दे। शराब पीता है तो शराब छोड़ दे और अन्य कोई नशा करता है तो उस नशे को छोड़ दे, यह अच्छा है। मैं शास्त्र पढ़ूँगा, मैं सदा सत्यवादी रहूँगा, मैं दूसरों का कल्याण करूँगा, मैं क्षमा दूँगा, इस रूप में पकड़ना अच्छा है। अच्छे को पकड़ना और बुरे को छोड़ना अच्छा है।

जिज्ञासा— कभी ऐसा होता है कि भावना कुछ होती है और मन कुछ और करने का होता है। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? इस बात में कन्फ्यूजन है। कोई चीज अच्छी लग रही है, जबकि वह खराब है। अमुक वस्तु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, फिर भी खाने का मन हो जाता है। शराब नहीं पीना है, फिर भी आदमी उसकी तरफ आकृष्ट हो जाता है। इस तरह मन कुछ और बोलता है व भावना कुछ और बोल रही है, ऐसे में क्या करना चाहिए?

समाधान—मन की हर बात नहीं माननी चाहिए। विवेक की बात माननी चाहिए। विवेक कहेगा कि यह अच्छा है, मन कहेगा कि यह अच्छा नहीं है। विवेक कहेगा कि तुम संतों के पास जाओ, संतों की बात सुनो, प्रवचन सुनो। मन कहेगा कि कौन जाएगा, कौन श्रम करेगा। ऐसी स्थिति में मन की नहीं, विवेक की बात मानिए। विवेक हमारा राजा रहे। हम विवेक की बात मानें।

जिज्ञासा— हमारे वर्तमान जीवन में पूर्वजन्म का प्रभाव बताते हैं। जबकि हमें इस बारे में कुछ पता नहीं होता है। हम कोई अच्छा कार्य करते हैं और उसका परिणाम अच्छा नहीं आता है तो कहते हैं कि यह पूर्वजन्म का प्रभाव है, ऐसा क्यों? पूर्व जन्म के बारे में कुछ पता ही नहीं है तो उसके प्रभाव का कैसे पता चला?

समाधान— जानकारी नहीं होने से प्रभाव नहीं पड़े, यह सिद्धांत नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए एक वर्ष का एक छोटा बच्चा है, वह यह नहीं जानता कि अग्नि क्या होती है। वह यदि अग्नि में हाथ डालता है तो हाथ जलेगा या नहीं? त्वचा कहेगी कि मुझे पता ही नहीं था कि अग्नि हाथ जलाती है, मेरा हाथ जला दिया। इस प्रकार जानकारी नहीं होने पर भी उसका प्रभाव तो पड़ेगा। जानकारी नहीं होना अज्ञान है। एक आदमी जानता नहीं कि यह जहर है और उसे खा लिया या पी लिया और उसके प्रभाव से मर गया तो कोई कहेगा कि यह तो जानता ही नहीं था। जानो या मत जानो, वह चीज तो अपना प्रभाव दिखा सकती है। इसी प्रकार पूर्वजन्म को जानें या न जानें, उसका प्रभाव इस जीवन पर रहता है।

जिज्ञासा— हम लोग कई कार्य करते हैं। कार्य के प्रति हमारे मन में अच्छे-बुरे विचार आते हैं। इन विचारों के आने का कारण क्या है?

समाधान— आदमी के भीतर संस्कार हैं। जैसे एक गड़ड़ा है, उसमें गंदगी है तो बदबू आ जाती है और एक अच्छी चीजों का घड़ा है तो उसमें से सुगंध आ जाती है। इसी प्रकार भीतर में अच्छे-बुरे संस्कार हैं। जब अच्छे संस्कार उभरते हैं तो अच्छे विचार आ सकते हैं और जब बुरे संस्कार उभरते हैं तो बुरे विचार आ सकते हैं। गीता में एक बात आती है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पुरुषः।

अनिच्छन्नपि वाष्णेय! बलादिव नियोजितः।।

हे वाष्णेय (वृष्णि कुलोत्पन्न)! यह मनुष्य स्वयं न चाहते हुए भी, किससे प्रेरित होकर, बलपूर्वक खींचा जाता हो, उस प्रकार पाप का आचरण करता है?

श्रीकृष्ण कहते हैं--

**काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥**

रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम, यह क्रोध, वह बहुत खाने वाला अर्थात् भोगों से कभी न अघानेवाला और महापापी है, इसे संसार में तू शत्रु जान। आदमी के भीतर काम व क्रोध के संस्कार हैं। वे जब अनियंत्रित हो जाते हैं तो गलत विचार आ जाते हैं और जब वे नियंत्रण में रहते हैं, शांत रहते हैं तो विचार अच्छे बन जाते हैं।

साधु-साध्वियों के लिए स्मरणा

- साधु-साध्वियों का पुस्तक आदि प्रातिहारिक सामान अस्थायी रूप में भुलाना हो तो तेरापंथी सभा के अध्यक्ष के सिवाय किसी को न भुलाया जाए। विशेष स्थिति में आचार्यप्रवर से पूर्व स्वीकृति लें अथवा पश्चान्निवेदन करना वांछनीय है।
- एक साधु या साध्वी के पास प्रातिहारिक पुस्तक आदि का एक बैग/एक थैला/एक कार्टून/ एक प्रातिहारिक पुट्टे से ज्यादा न रहे। किसी विशेष कार्य, आगम आदि कार्य के लिए आवश्यक हो तो आचार्यप्रवर से अनापत्ति प्राप्त कर एकाधिक भी रखा जा सकता है।

(अनुशासन संहिता-- चारित्रात्मा-समुदाय १३/३/४३-४४)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/-श्रीमती सुंदरबाई (धर्मपत्नी स्व. टोडरमलजी डूंगरवाल, दीवेर-चेन्नई) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल, जसवंतमल, सुपौत्र प्रवीण, हेमंत, अरविंद, कमल डूंगरवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्री अनिलकुमार रतनलालजी भंडारी (ब्यावर-भायन्दर मुम्बई) की प्रथम पुण्यतिथि पर पारिवारिकजनों द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्रीमती रूपादेवी दूगड़ (धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मीपतजी दूगड़, लाडनू) की प्रथम पुण्यतिथि पर हणुतमल, ऊषा गिड़िया, दहीसर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. माणकचंदजी बाफना (गुडाचतुराजी-तक्कोलम, चेन्नई) की पुण्य स्मृति में श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती कमलाबाई, प्रकाशचंद, पदमराज, दिलीपकुमार, श्रीकांत, संभव, नक्ष बाफना द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्रीमती भीखीबाई (धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. चुन्नीलालजी परमार कमोल, सूरत-विरार) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू मोहनलाल-जमुनाबेन, भंवरलाल-बसंतीबेन, प्रकाशचंद-मधुबेन, डॉ. रमेश-रिटाबेन, सुपौत्र विनय, राकेश, मनीष, हितेन द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

**केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०६७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१**